Hazratganj
Lucknow
January 15, 1970

Dear Sir,

Perhaps you will agree that our greatest asset are the people who inhabit this land. You will also agree that they are divided into various political, linguistic, cultural, and religious units, and that Muslims constitute one of these units. You must also be conscious that if any individual or group residing in this country is allowed to remain backward and has to live in an atmosphere of uncertainty, suspicion and distrust, it no longer remains an asset to the country but becomes a liability.

We feel that in this our mother-land Muslims have for a long time not been in a position to play their part as full citizens of the country. This not only hampers their progress; it may at any time also make them a burden to the country, and the disabilities which they have to face may lead them to engage in activities detrimental not only to themselves but also to society at large and to the country.

If we look at the problem in the face, we have to admit that after 1947, individuals or parties belonging to the majority community did not make any attempt to win the confidence of the minorities, or if they did, they were unsuccessful in their attempt. It is, therefore, now for the Muslims as devoted servants and sincere well-wishers of the country, to arise and do what their compatriots have failed to accomplish.

With this purpose in view we request you to give us, keeping in view the position which Muslims are entitled rightfully to occupy in this country, some constructive suggestions, so that we may consider them at the forthcoming session of the Muslim Majlis at Kanpur. For example, we would like you to tell us :—

(1) Do you agree that the approach of Muslims generally towards national problems is constructive and secular? If not what in your view are the reasons for it.

(2) In what respect Muslims and non-Muslims of your district can work in co-operation with each other and by so doing lessen the gulf existing

between them? Please give concrete suggestions.

(3) Are there any people in your district who rundown Muslims and create suspicion and distrust against them? If so, what should the Muslims do to lessen the tension so created and generate a feeling of love and trust between the two communities?

(4) To what extent are you prepared to co-operate with those Muslims who are trying to remove their economic backwardness, educate their children, and solve the many other problems which confront them.

In case you have some solution of your own to improve the relations between the two communities, do write to us about it so that we may take advantage of your considered views and decide on something which may improve conditions in our State and make it an ideal to be followed by the rest of the country.

Our sphere of action at present is only U. P. But our querries have a country-wide significance. We have, there fore, requested important personalities outside U. P. also to answer our above querries. Please send your replies by February 15, 1970 and oblige.

Thanking you in anticipation for co-operating with us.

Yours faithfully.

A. J. Faridi

(A. J. Faridi)
President
Muslim Majlis, U. P.

Book Post

To

Mr. M. R. Masani, M. P.
14 D, Mahatma Gandhi Road
Bombay-1

हजरतगंज
लखनऊ
१५ जनवरी, १९७०

प्रिय महोदय,

शायद आप इस सत्य से इनकार नहीं करेंगे, कि भारत में निवास करने वाले करोड़ों व्यक्ति भारत की सबसे बड़ी सम्पत्ति हैं। आप इस सत्य से भी इनकार नहीं करेंगे कि भारतीय, विभिन्न प्रकार के राजनीतिक, भाषीय, सांस्कृतिक और धार्मिक रूप से विभाजित हैं और भारत में मुसलमान भी एक ऐसी इकाई है। आप इस बात को समझते ही हैं कि कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह अगर पिछड़ा रहता है या अविश्वास, घृणा और असुरक्षा के वातावरण में रहता है तो व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह देश के लिए वरदान होने की अपेक्षा भार बन जाता है।

हम इस बात को महसूस करते हैं कि अपने इस भारत देश में काफी समय से मुसलमानों को भारत के सम्मानित नागरिकों के रूप में कोई अहम हिस्सा अदा करने को नहीं मिला है। यह केवल उनकी प्रगति को ही नहीं अवरुद्ध करता है, बल्कि यह बात किसी समय भी भारत के लिए भार बन सकती है। वे तमाम असुविधाएँ जो भारत के मुसलमानों को झेलनी पड़ती हैं, उन्हें ऐसे काम करने के लिए विवश कर सकती हैं, जो केवल उनकी अपनी ही प्रगति के लिए नहीं, बल्कि समाज और देश के लिए भी घातक हो सकती हैं।

अगर हम इस समस्या का वास्तविक रूप से अध्ययन करें तो पता लगता है कि सन् १९४० ई० के बाद बहुसंख्यक समुदाय के व्यक्ति और दलों ने अल्प संख्यकों का विश्वास पाने की कोशिश नहीं की और अगर उन्होंने प्रयत्न किया भी तो अपने प्रयत्न में असफल रहे। इसलिए देश के सच्चे सेवक और हितैषी होने के नाते, मुसलमानों का कर्त्तव्य है कि वे अब अपने कर्त्तव्य को पहचानें और उस काम को कर दिखायें जिसको करने में बहुसंख्यक समुदाय के लोग या दल असफल रहे हैं।

हमारा आपसे अनुरोध है कि इस तथ्य को ध्यान में रखकर कि मुसलमानों को भी इस देश में अधिकृति स्थान प्राप्त करने का अधिकार है, आप हमें उनके विषय में कुछ रचनात्मक सुझाव दें ताकि हम मुस्लिम-मजालिस के आगामी जलसे में जो कानपुर में होने जा रहा है, उन पर विचार कर सकें। उदाहरण के लिए हम चाहते हैं कि आप हमें निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देने की कृपा करें।

१—क्या आप इस बात से सहमत हैं कि साधारणतया मुसलमानों का दृष्टिकोण राष्ट्रीय समस्याओं के मामले में रचनात्मक और धर्मनिष्पेक्ष है? यदि ऐसा नहीं है तो इसके क्या कारण हैं?

२—आपके जिले के मुसलमान और गैर मुसलमान किस प्रकार और किस क्षेत्र में सहयोग से काम कर सकते हैं ताकि उनके बीच अन्तर की खाई कम की जा सके। कृपया निश्चयात्मक सुझाव दें।

३—क्या आपके जिले में कुछ ऐसे लोग हैं जो मुसलमानों के प्रति अनुदान व्यवहार करते हैं और उनके विरुद्ध अविश्वास पैदा करते हैं ? यदि ऐसा है तो मुसलमानों के सन्देह और अविश्वास दूर करने के लिए क्या करना चाहिए ताकि दोनों सम्प्रदायों में प्रेम और विश्वास का वातावरण पैदा हो सके।

४—उन मुसलमानों के साथ, जो अपना आर्थिक पिछड़ापन दूर करने, अपने बच्चों को शिक्षित बनाने और अपने क्षेत्र या राज्य की अनेक समस्याओं को सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं, आप किस हद तक सहयोग करने के लिए तैयार हैं ?

५—यदि इनके अतिरिक्त आपके पास कुछ ऐसे सुझाव हैं जिनके द्वारा दोनों सम्प्रदायों के पारस्परिक सम्बन्ध सुधारे जा सकते हैं, तो आप हमें बताने की कृपा करें ताकि हम उन पर विचार करके उन्हें कार्यान्वित करें और उत्तर प्रदेश को दूसरे राज्यों के लिए एक आदर्श बना सकें।

इस समय हमारा कार्यक्षेत्र केवल उत्तर प्रदेश है लेकिन जो प्रश्न हमने ऊपर किये हैं और जो मामले हमने उठाये हैं वे पूरे देश के लिए महत्त्वपूर्ण हैं इसलिए हमने उत्तर प्रदेश के बाहर के उच्चकोटि के सज्जनों से भी अनुरोध किया है कि वे सारे प्रश्नों का उत्तर भेजें। हम अनुग्रहीत होंगे, यदि आप अपने उत्तर हमें १५ फरवरी, सन् १९७० ई० तक भेज देंगे।

आपके सहयोग के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

आपका विश्वासपात्र

(डाक्टर) ए० जे० फरीदी
मुस्लिम-मजालिस, उत्तर प्रदेश